स्नातक प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष
सत्र - 2020 - [redacted] 2023
बी० ए० ऑनर्स, प्रथम पत्र / सामान्य हिन्दी /
अनुसंगिक हिन्दी

प्रेमाख्यानक काव्य - परंपरा

जिस प्रकार कविता भारतीय भक्ति उत्तर भारत पहुँचकर लोक और शास्त्र के द्वंद्व की पृष्ठभूमि में सगुण और निर्गुण के रूप में दो धाराओं में विभाजित हो जाती है ठीक उसी प्रकार हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि में जहाँ निर्गुण भक्ति की संतकाव्यधारा का आविर्भाव होता है। निर्गुण भक्ति की एक धारा सूफी मत से प्रभावित है, उसे प्रेमाख्यानक काव्यधारा की संज्ञा दी गई। यही कारण है कि सूफी साधना-पद्धति में प्रेम मार्ग पर जोर दिया गया है और इन रचनाओं में सूफी दर्शन को लौकिक प्रेमाख्यानों के आवरण में लपेटकर प्रस्तुत किया गया। इसीलिए इसे कई बार सूफी काव्यधारा भी कहा जाता है।

सूफी मत इस्लाम के उदार मानवतावादी चेहरे का प्रतिनिधित्व करता है। इसी से प्रेरित होकर सूफी मत से प्रभावित लोगों के एक समूह का आविर्भाव हुआ जिन्होंने मानुष सत्य के उद्घाटन को अपनी रचना का प्रतिपाद्य बनाया। लेकिन सूफी मत से संबद्धता के बावजूद प्रेमाख्यानक काव्यधारा से जुड़े रचनाओं की दृष्टि संप्रदाय-सापेक्ष न होकर मूलतः सापेक्ष थी।

यहीं वह पृष्ठभूमि है जिसमें मनुष्यता के सामान्य रूप को लेकर प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा का सूत्रपात होता है। निश्चय ही प्रेमाख्यानक काव्य

परंपरा का नाम लेते ही हमारे मानस-पटल पर पहला नाम जायसी और उनकी रचना 'पद्मावत' का आता है। स्वयं 'पद्मावत' की भूमिका में जायसी ने इस बात का संकेत दिया है कि प्रेमाख्यानक काव्य ~~परंपरा~~ की परंपरा पहले से विद्यमान थी और इसीलिए पद्मावत पहला प्रेमाख्यानक काव्य नहीं है।

प्रेमाख्यानक काव्य की इस परंपरा की शुरुआत होती है - मुल्ला दाऊद की रचना 'चंदायन' से। मुल्ला दाऊद ने इसमें लोरिक और चंदा की लोक-प्रचलित प्रेम-कथा के आवरण में सूफी मत और इसमें प्रचलित विश्वासों की अभिव्यक्ति की है, लेकिन, 'चंदायन' पर प्राकृत और अपभ्रंश के भारतीय प्रेमाख्यानकों के असर को भी सहज ही लक्षित किया जा सकता है। मुल्ला दाऊद के बाद ~~चंदायन~~ कुतुबन आते हैं। इसमें उन्होंने 'मृगावती' को लेकर उपस्थित होते हैं। चंद्रनगर के राजकुमार और कंचनपुर की राजकुमारी मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन किया है। यहाँ भी भारतीय लोककथा को आधार बनाकर सूफी प्रेम के हठीलेपन को चित्रित किया गया है। इस रचना में रहस्यात्मकता और आध्यात्मिकता भी मौजूद है। रचना का अंत सतीत्व के पालन से होता है।

इन दोनों रचनाओं के बाद मंझन 'मधुमालती' को लेकर आते हैं, इसमें भी राजकुमार मनोहर और मधुमालती के हठीले प्रेम व विरहजन्य वेदना को

अभिव्यक्ति मिली है। इसपर भी आध्यात्मिकता का आवरण चढ़ा हुआ है। फिर जायसी "पद्मावत" को लेकर आते हैं। इसमें उन्होंने राजा रतनसेन व रानी पद्मावती की लोक प्रचलित प्रेम-कथा को आधार बनाया है। इस रचना में इतिहास व कल्पना के सुंदर संयोग के जरिए सूफी प्रेम-तत्व और वेदांती अद्वैतवाद के बीच सामंजस्य बैठाने की कोशिश की गई है। इस रचना में न केवल भारत की समन्वित संस्कृति की आधार ग्रहण करते देखा जा सकता है, वरन् सामासिक भाषा के रूप में सहज हिन्दी की पहचान के निर्मित होते हुए भी निःसंदेह ही लक्षित किया जा सकता है। धरातल विषय-वस्तु, संवेदना और शैली के धरातल पर पद्मावत की विशेषताएँ इस बात का संकेत देती हैं कि यह पूर्व से चली आ रही प्रेमाख्यानक काव्य-परंपरा का उत्कर्ष है। साथ ही, इसे प्रेमाख्यानक काव्यधारा की प्रतिनिधि रचना भी माना जा सकता है। कारण यह कि पूर्ववर्ती से लेकर परवर्ती प्रेमाख्यानक काव्यधारा तक की प्रवृत्तियों और विशेषताओं का इसमें समावेश हुआ है।

जायसी के बाद उस्मान 'चित्रावली' लेकर उपस्थित होते हैं। इसमें नेपाली ~~राजकुमारी~~ राजकुमार सुजान के साथ 'चित्रावली' के विवाह का चित्रण किया गया है और सूफी प्रेमाख्यानकों के साथ-साथ इतर काव्य-परंपरा और उसकी काव्य-रूढ़ियों का भी समावेश इसमें हुआ है। इसपर जायसी का प्रभाव दिखता है। नूर मोहम्मद

'इन्द्रावती' के अतिरिक्त प्रेमाख्यानक काव्यों की इस परंपरा को बढ़ाने की कोशिश करते हैं, लेकिन इनमें उनकी इस्लामी आस्था की अभिव्यक्ति मिलती है। नारायण दास की 'छिताई वार्ता', ईश्वरदास की 'सत्यवती कथा' और शेख निसार की 'यूसुफ : जुलेखा' को भी प्रेमाख्यानक काव्यपरंपरा में महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ० मोनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
पी० बी० एस० एस० कॉलेज, बरौनी,
बेगूसराय
(ललित नारायण मिथिला विवि,
दरभंगा।